ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

इक्कीसवीं सदी के नवगीतों में जीवन–मूल्य

[1]डॉ0 शार्दूल विक्रम सिंह
[1] एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 13 Jan 2019 ; Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

नवगीत वैदिक काल से लेकर अद्यावधि तक नव तत्वों को सार्थक रूप देते हुए मनुष्य की आशाओं एवं आकांक्षाओं के साथ सम्पृक्त रहा है। युग के अनुसार इसके विषयगत रूप भले ही परिवर्तित हुए हों लेकिन सनातनधर्मी जीवन–मूल्य, परम्परायें, संवेदनाएं और लोकानुभूति उसी प्रकार से बनी हुई हैं।

मुख्य शब्द – इक्कीसवीं सदी, नवगीत, जीवन–मूल्य, सनातनधर्मी जीवन–मूल्य, परम्परायें, संवेदनाएं और लोकानुभूति।

प्रस्तावना

नवगीत कविता की एक विधा है और इस दृष्टि से इसने अपने आप को मानवीय मूल्यों से कभी भी पृथक नहीं किया। ''हर युग की कविता अपने युग के मनुष्य की संवेदना की थिरकन और सुलगन से भरपूर कथ्य के साथ अपनी जीवंतता बनाये रही है किंतु समकालीन नवगीत अतीत की पृष्ठभूमि पर वर्तमान को जीते हुए भविष्य की यात्रा में जितना सचेष्ट रही हैं उतना दूसरे युग की कविता नहीं दिखायी देती।''[1] नवगीतों में सदैव जीवन–मूल्य और लोक संवेदना केन्द्र में रही है यही कारण है कि वह सामान्य जन–जीवन से प्रभावित रहा है।

जब हम इक्कीसवीं सदी के नवगीतों के कथ्यात्मक वैशिष्ट्य की बात करते हैं तो भारतीय चिंतन, वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद, पर्यावरण, वैज्ञानिक और इतिहास बोध सभी विमर्शों के साथ–साथ इसके मूल तत्वों में मानवीयता, संवेदनात्मक मार्मिकता, सामाजिक समरसता, दया, करुणा, क्षमा, परोपकार, अहिंसा, सत्यानुभूति, ईमानदारी, कर्मनिष्ठा और सांस्कृतिक चेतना जैसे मूल्य समाहित हो जाते हैं। इसी के मिलते–जुलते जीवन–मूल्य संवेदनात्मक स्तर पर लोक को स्पर्श करते हुए आगे बढ़ते हैं। ''नवगीत लोक संस्कृति से बाहर नहीं है। जनचेतना, लोकचेतना, ग्रामीण और न गरीय सभी पक्षों को अपने में समेटकर चलने की कुशाग्रता नवगीत में है। लोकजीवन की कहावतें, मुहावरों, लोक संस्कृति के तत्वों तथा रीति–रिवाज, आचार–विचार सभी कुछ अपने में समाहित करती हुई धारा है

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

नवगीत।''[2] नवगीत ने मानवीय मूल्यों को केन्द्र में प्रतिष्ठित किया है। मनुष्य सृष्टि का श्रृंगार है। सृष्टि में जो कुछ भी है वह मानव के लिए ही है इसलिए मनुष्य जीवन की समस्याओं, विडम्बनाओं, भय, अभाव, अन्याय को नवगीतकारों ने अपनी रचनाओं में प्रमुखता प्रदान की है। मानव जीवन को भय, संत्रास, अन्याय और शोषण से मुक्त कराना नवगीतकारों का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इक्कीसवीं सदी के पूर्व रचे गए नगर बोध वाले गीतों ने वर्तमान में ग्राम्य बोध और आम आदमी के दुःख दर्द का स्थान ले लिया है। ''जब कभी व्यक्ति पीड़ा अपने दायरे में सिमटकर रह गई तब उसकी अभिव्यक्तियाँ भी वैयक्तिक ही रहीं। किंतु यदि व्यक्ति ने पीड़ा को सार्वजनिक धरातल प्रदान किया तो वह लोक जीवन के तल पर उतर गई। यह सत्य हमारे लोकजीवन में नये–नये स्वर देता रहा है। नवगीत जब जनमानस के निकट पहुँचा तो उसने लोक धुनों, लोक स्वरों और लोक शक्तियों का सहारा लिया।''[3] वर्तमान में हम वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के ऐसे दौर में जी रहे हैं जिसमें संवेदना और सांस्कृतिक चेतना को हम खोते जा रहे हैं।

मनुष्य उपभोक्तावादी चमक–धमक के चक्कर में पड़कर मानवीय मूल्यों को खोता चला जा रहा है। नवगीतों ने मनुष्य को सजग करते हुए पुनः मानवीय मूल्यों से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है। मनुष्य का मशीनीकरण जिस गति से हो रहा है उससे उसकी संवेदना पर गहरा असर पड़ा है। जीवन के राग–रंग से वह दूर होता चला जा रहा है। उपभोक्तावादी मानव ने भौतिक उपलब्धियों को ही जीवन का उद्देश्य मान लिया है जिसके कारण मनुष्य और समाज दोनों के सामने मूल्यों का संकट खड़ा हो गया है। दया, करुणा, ममता, मैत्री, मुदिता जैसे मानवीय गुणों और नदी, झरनों, पहाड़ों, ऋतुओं के सौन्दर्य से मनुष्य दूर होता चला जा रहा है। पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन के दायरे में सिमटते जा रहे मनुष्य की भौतिक आवश्यकताएँ उसके जीवन मूल्यों को निगल जाना चाहती हैं। ऐसे समय में नवगीतकारों ने अपने नवगीतों में मनुष्य को मानवीय मूल्यों से जोड़ते हुए उसे जीवन के प्रति आस्थावान होने तथा विश्व–बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत होकर जीवन जीने के लिए प्रेरणा प्रदान की है। नवगीतकारों ने मानव जीवन को एक नई अर्थवत्ता प्रदान करने की भरसक कोशिश की है। यथा –

''व्यर्थ जा रही सारी अटकल
कितना बेबस, कितना बेकल आम आदमी
मन में लेकर सपनों का घर खड़ा हुआ है चौराहे पर
चारों ओर बिछी है दलदल कैसे खोजे राहत के पल
आम आदमी।''[4]

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

इक्कीसवीं सदी के नवगीतों ने व्यक्ति और समाज दोनों के समूचे व्यक्तित्व को एकरूपता प्रदान करते हुए मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का कार्य किया है। जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में लोक संवेदना, सामाजिक सरोकार, आधुनिकता बोध, मानवीय संवेदना, वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव प्रकृति और प्रेमिल भावों की व्यंजना को समझना अत्यन्त आवश्यक है। नवगीतकार सदैव अपनी युगीन समस्याओं और विद्रूपताओं को केन्द्र में रखकर रचना कर्म करता है। वर्तमान की भीषण और विषम परिस्थितियों ने मनुष्य को अन्दर ही अन्दर तोड़कर रख दिया है वह भय, संत्रास की जिन्दगी जीते–जीते निराशावादी हो गया है। यह नगर और गाँव दोनों स्तर पर देखा जा सकता है। श्रेष्ठ नवगीतकार डॉ0 ओमप्रकाश सिंह गाँव की संवेदना को सहज रूप में व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

''चौपालें चुपचाप खड़ी हैं
टूटे पाँवों पर
जाने किसकी नजर लगी है
अपने गाँवों पर
मंदिर के घण्टे गूँगे हैं
माँओं के किस्से
मुस्कानों के घर के भीतर
हुए कई हिस्से
थक रहा है अहं आज
अपनी ही छावों पर।।''[5]

नवगीतकारों ने अपने नवगीतों में किसी भी वाद–प्रतिवाद से मुक्त होकर स्वतन्त्र चेतना से मनुष्य के संघर्षशील जीवन को युगीन परिस्थितियों के अनुसार नवीन दिशा प्रदान की। नवगीतकार व्यक्ति को समष्टि से जोड़ते हुए लोक–मानस के धरातल पर सदैव संवेदनशील रहा है। इक्कीसवीं सदी के नवगीत सामाजिक सरोकारों को केन्द्र में रखकर मनुष्य की संवेदना को अनुरंजित करते हैं। यह सच है कि आज समाज के भौतिक ढाँचे में बहुत परिवर्तन हो चुका है जिसके सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम नये–नये रूपों में हमारे सम्मुख आ रहे हैं। समाज का भौतिक उन्नयन जिस गति से हो रहा है उसका सांस्कृतिक विघटन उसकी दुगुनी गति से होता हुआ दिखाई दे रहा है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

रिश्ते–नाते, संवेदना, भाईचारा और अपनेपन का भाव मिटता चला जा रहा है। मोबाइल संस्कृति और इंटरनेट के गहरे प्रभाव से मनुष्य भी वंचित नहीं है, यथा–

''बापू छीलें घास
देखकर
बेटा हँसता है
वो क्या जाने
मुखिया की
कब कौन विवशता है
गिटपिट सीख गया
दो अक्षर
करता है मनमानी
उतर गया
उसकी आँखों से
मर्यादा का पानी
उसके सपनों में केवल
अमरीका बसता है।।''[6]

नवगीत ने अपनी पूरी सामर्थ्य से मूल्यहीनता के संकट को स्वर प्रदान किया। नवगीतकारों की रचनाधर्मी संवेदना ने वैयक्तिक एवं सामाजिक अनुभूतियों के स्तर पर इसे पहचानते हुए अभिव्यक्ति प्रदान की। इन्होंने गाँव के साथ–साथ नगरों और महानगरों के अकेलेपन, अजनबीपन और यांत्रिकता से भरे हुए जीवन को भी अपनी रचना का विषय बनाया। वर्तमान युग के लघु मानव की घुटन, पीड़ा और कातरता को नवगीत ने नयी जुबान दी। ''मध्यवर्ग में तथा बेरोजगार नयी पीढ़ी में मूल्यहीनता और असुरक्षा की भावना के कारण तनाव और उद्वेग जनित बेचैनी बढ़ गई। फलतः उसकी सहज स्वाभाविक प्रतिक्रिया में नवगीत के रचनाकारों का स्वर भी बदल गया।''[7] इस प्रकार यह बात स्पष्ट रूप से दिखायी देती है कि इक्कीसवीं सदी के नवगीतकार मानवीय मूल्यों के प्रति चिंतित एवं सजग हैं। बदलते हुए सामाजिक परिदृश्य में जिस प्रकार से संवेदना और रक्त के बंधन ढीले पड़ रहे हैं उसको देखते हुए नवगीतकारों ने अपने नवगीतों के द्वारा स्तुत्य प्रयास किया है। मानवीय संवेदना के स्तर पर ही किसी सभ्य समाज और संस्कृति के विकास की सम्भावनाएँ बेहतर हो सकती हैं।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. समकालीन नवगीत की अवधारणा और जीवन–मूल्य – डॉ0 उर्वशी सिंह, पृ0सं0 238, राका प्रकाशन 40–ए, मोती लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद–1, संस्करण–2010ई0
2. हिन्दी गीत यात्रा एवं समकालीन सन्दर्भ–संपादक–डॉ0 विनय कुमार पाठक, डॉ0 (श्रीमती) जयश्री शुक्ल पृष्ठ सं0 – 464, भावना प्रकाशन, 109–A, पटपड़गंज, दिल्ली–110091, प्रथम संस्करण–सन् 2005 ई0
3. नयी सदी के नवगीत (भाग–दो)–सम्पादक–डॉ0 ओम प्रकाश सिंह पृष्ठ सं0 – 18, नमन प्रकाशन, 4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 प्रथम संस्करण–2016 ई0।
4. समकालीन कविता और नवगीत का तुलनात्मक आकलन–डॉ0 ओम प्रकाश सिंह, पृष्ठ सं0–88, राका प्रकाशन 40A, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद–211002, संस्करण–2016 ई0।
5. समकालीन नवगीत की अवधारणा और जीवन–मूल्य – डॉ0 उर्वशी सिंह, पृ0सं0 241–242, राका प्रकाशन 40–ए, मोती लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद–1, संस्करण–2010ई0
6. कालजयी नवगीतकारः मधुकर अष्ठाना–सम्पादक डॉ0 आर0पी0 वर्मा पृष्ठ सं0–387–88, निर्मल पब्लिकेशन–139 गली नं0 3, कबीर नगर, दिल्ली–94, संस्करण–वर्ष–2011 ई0।
7. आधुनिक गीतिकाव्य – डॉ0 उमाशंकर तिवारी, पृ0सं0 370, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, द्वितीय संस्करण 2000 ई0